# SOCIOLOGY

B.A. III Honours
Paper V PPU
Dr. M.A. JOHN

## HERBERT SPENCER

## ORGANISMIC CONCEPT OF SOCIETY

Herbert Spencer एक ब्रिटिश समाजशास्त्री था। जिसका जन्म England के डर्बी नामक स्थान पर 1820 में हुआ। उसके चाचा द्वारा उसकी शिक्षा घर पर ही सम्पन्न हुई। पेशे से वह Engineer था धीरे धीरे समाज तथा राजनीति में उसकी रूचि बढ़ी और 1848 में उसने Engineering का काम छोड़कर Economist नामक पत्रिका के सह सम्पादन का कार्य प्रारम्भ कर दिया। धीरे धीरे समाजशास्त्र में उसकी रुचि बढ़ी और 1950 में उसने अपनी सबसे पहली पुस्तक Social Statics के नाम से प्रकाशित की। Descriptive Sociology उसकी पहली समाजशास्त्रीय पुस्तक थी। 1896 में Principles of Sociology नामक एक और पुस्तक प्रकाशित की। Herbert Spencer, August Comte के विचारों का समर्थक था। सर्वप्रथम Spencer ने ही Philosophy तथा Sociology को एक दूसरे से अलग किया। Plato, Aristotle, तथा Spengler की ही तरह Herbert Spencer ने भी समाज को एक organism के रूप में स्वीकार किया। उसके अनुसार समाज एक जीव रचना के समान है। समाज शास्त्र के क्षेत्र में उसके महत्वपूर्ण योगदान है। उसने विभिन्न सिद्धान्त प्रस्तुत किये हैं जिनमें organismic theory को विशेष महत्व प्राप्त है। 19वीं शताब्दी में सामाजिक विचारों पर जीवशास्त्र का प्रभाव पड़ना प्रारम्भ हो गया था। और समाज की तुलना शरीर एवं शरीर के ढाँचे से की जाने लगी थी उनमें Herbert Spencer का स्थान प्रमुख

Scanned by CamScanner

था। Spencer ने अपनी पुस्तक Principles of Sociology में समाज की स्वतंत्र प्रकृति पर जोर डालते हुए समाज को जीवित शरीर के समान सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। उसका यही प्रयत्न Organismic theory of Society कहलाता है। मुख्यतः सावयव सिद्धान्त के समर्थकों के तीन सम्प्रदाय उल्लेखनीय स्थान रखते हैं। जिन्हें दार्शनिक सावयवादी, मनो समाजिक सावयवादी तथा जैविक सावयवादी। Spencer जैविक सावयवादी था।

Spencer का यह विचार है कि समाज जैविक रचना के समान होता है। जिस प्रकार शरीर के विभिन्न अंग परस्पर सम्बन्धित होते हैं उसी प्रकार समाज के भी विभिन्न व्यक्ति और संस्था में परस्पर सम्बन्धित होते हैं। उसके अनुसार जिसप्रकार एक जीव रचना का जन्म होता है और धीरे धीरे विकसित होता है उसी प्रकार समाज भी धीरे धीरे विकसित होता है। समाजिक ढाँचे में व्यक्ति समाज की एक इकाई का स्थान रखता है।

Spencer ने समाज की सावयवी व्यवस्था की अनेक विशेषताओं का भी पृथक रूप से उल्लेख किया है। उसने समाज के विभिन्न अंगों में सम्पर्क की बात कही है परन्तु यह भी विचार किया कि प्रत्येक अंग स्वतन्त्र भी होती है। इस प्रकार उसने व्यक्ति को पूर्ण रूप से समाज पर निर्भर रहने की बात नहीं स्वीकार की है। अर्थात जिस प्रकार एक कोशिका शरीर से अलग रह कर नष्ट हो जायेगी उसी प्रकार बिना कोशिका की शरीर की कल्पना नहीं की जा सकती है। दोनों का एक दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है परन्तु वह एक central control द्वारा नियन्त्रित होते हैं।

Scanned by CamScanner

Spencer ने दोनों की निकटता के लिये जो तर्क प्रस्तुत किये हैं वह इस प्रकार है।

समाज व जैविक व्यवस्थाओं का विकास एक बीज तत्वों के समूह के कारण प्रारम्भ होता है।

जैविक सावयवी व्यवस्था और सामाजिक सावयवी व्यवस्था में समानता इसके क्रमिक विकास के द्वारा भी बताई जा सकती है। जिस प्रकार व्यक्ति का शरीर में धीरे धीरे बचपन, यौवन, प्रौढता और वृद्धावस्था आती है उसी प्रकार समाज में भी धीरे धीरे परिवर्तन होते रहते हैं

उसने यह भी विचार किया की दोनों सावयवी व्यवस्थाओं के ढाँचे में अपने अपने विकास के साथ साथ जटिलता आती है। जिस प्रकार जैविक शरीर के विकास के साथ उसके विभिन्न अंग सक्रिय होते जाते हैं एवं अलग अलग कार्य करना प्रारम्भ कर देते हैं उसी तरह समाज के भी विभिन्न अंग अधिकाधिक जटिल होते जाते हैं। जैविक तथा सामाजिक सावयव्य दोनों का निर्माण इकाइयों के सम्मिलित समूह से होता है। जिस प्रकार व्यक्ति समाज की इकाईयाँ हैं उसी प्रकार शरीर की इकाइयाँ cells होते हैं।

जैविक तथा सामाजिक सावयव्य दोनों के अंग परस्पर सम्बन्धित एवं आश्रित होते हैं।

समाज या शरीर के किसी भी व्यक्तिगत इकाई की मृत्यु के कारण समाज या शरीर की मौत नहीं हो जाती।

जैविक सावयवी व्यवस्था और सामाजिक सावयवी व्यवस्था दोनों कार्य संचालन हेतु विभिन्न प्रणालियाँ एवं प्रक्रियाएँ भी समान है। जिस प्रकार जैविक शरीर में controlling system, circulation system

एवं nutrition system होते हैं। उसी प्रकार समाज में भी सरकार एवं Military के रूप में नियन्त्रण व्यवस्था है।

Spencer ने आगे यह भी विचार किया कि जिस प्रकार शरीर में विकास क्रम होता रहता है ~~तथा पुराने भाग के समाप्त हो जाने पर नये भाग जन्म लेते रहते हैं~~ इसी प्रकार समाज में भी अस्वस्थ एवं पीड़ित व्यक्ति नष्ट हो जाते हैं। उनका स्थान नवजात शिशु लेते रहते हैं।

Spencer ने Society और Living organism में कुछ आधारों पर पाये जाने वाले अन्तरों की ओर भी संकेत किया है। जैसे जैविक शरीर की भाँति समाज का कोई शारीरिक रूप नहीं होता है। शरीर के अंगों के समान समाज के सभी अंग ठोस एवं संगठित पूर्णता स्थापित नहीं कर सकते। शरीर एक पूर्ण सत्ता है। लेकिन समाज के विभिन्न अंग सम्पूर्ण या समग्र के सम्बन्ध में अपने अपने स्थान पर उतने स्थिर एवं निश्चित नहीं होते।

—x—